

ईजासीछोटाया ॥२०॥ सुषदेवपरीक्षतसीधु
 दीनसातमेकल्याणकीधु ॥२१॥ संतसाहेररांमा
 नंदा ॥ जुगचारकेकाटाफंदा ॥२२॥ ताकेसेवक
 दासकवीरा ॥ धंन्यसंतसीरोमणीधीरा ॥२३॥
 करोवांणीतणोविस्तारा ॥ जीवअगणीतकोटी
 ओधारा ॥२४॥ बंत्थानंदअषाजीनेभेग ॥ जीव
 शीवनासंसेमेटा ॥२५॥ पोसुअद्वैतज्ञानअपार
 सुणतांमांहुवोनीस्तारा ॥२६॥ एहेवीसाय्यअनंत
 अपार ॥ केहेतांरसनायेपांमुनहीपार ॥२७॥ की
 टीपरवरवतनोपारवेहेतां ॥ संतमहीमासकु
 नहीकेहेतां ॥२८॥ बीडुधुमरसाहरजेती ॥ मोम
 तरणरेणुकाजेती ॥२९॥ तेहेनोगणतांनवेअं
 त ॥ महीमावरणीसकुनहीसंत ॥३०॥ संतस
 कलसीरोमणीसार ॥ साहेबकुवेरहरीअवता
 र ३१ ॥ मास ॥१॥ ॥ अथभोजनवरवतनीधुंन्य
 पारं ॥ करमभरमजाकुनहीनेदत ॥ असरवा
 वंतनहीलषे ॥ गुणातीतअतीतअमापक ॥ सा
 सीवंतसतंतपषे ॥ जपोहोजनहंसाकेवल ॥ जा
 पजहीपदअजरअषे ॥ जयोहो ॥ टिक ॥१॥ जायेहो
 तसकलसबउतपंत ॥ जीनुचैतनअंकुरवीषे ॥ सो
 अंकुरधरअबीगतपती ॥ सुगततभोगअनंत

॥ धुंसा ॥

॥ ६५ ॥

सुखे जयो हो ॥ २ ॥ जैसे सुंन्य सरल घट मण्ड
वट नही ब्राध उपाध षषे ॥ तैसे ही कैवल्य शं
अरो कीत ॥ व्यापक वीश्व वीसे नां धषे ॥ जयो
हो ॥ ३ ॥ सुक्ष्म लकारण माहाकारण ॥ परम
कारण पद परम लषे ॥ तापर कैवल्य धां मसना
तंत ॥ कोई कजवर लाजां न सके ॥ ४ ॥ जयो ही
अज हृद्य जहदा जहद्य लछं न लष ॥ षष नही तां
हां कपां हां सुरतरषे ॥ सोतो सर्व वृत्ती तती तउ
तईत ॥ चैतं न इए जीनु जे ओ लषे ॥ जयो हो ॥ ५ ॥
अकल स्वरूप अषंडीत अनुसुत ॥ परस परे गु
रु लक्ष षषे ॥ अद्वैत आप्रमापमाप होई ना
सही वीश्व वीला सवीषे ॥ जयो हो ॥ ६ ॥ आद्य अं
त मध्य पुरस पुरंजन अंजन रही तनां भवीत भ
षे ॥ अदसुत वस्तु सो दीत सदपद ॥ ता अनुभव
रस संत चषे ॥ जयो हो ॥ ७ ॥ वार पार वीनु सही
तसु मल पद ॥ वीमल वी लोक नरो कदषे ॥ सुध
संमर सरस उरसुद सुदसा सजा ॥ कुवेर सोये
तांणी सोड सषे ॥ जयो हो जंन हंसा कैवल्य जाप
जे ही पद अजर अषे ॥ जयो हो ॥ ८ ॥ इती श्री धुंन्य
संपुर्णः ॥ अथ आर्ती लीयते ॥ विहै ली आरती ये म
हुलासा ॥ सुरी नर मुनी जंन करत वीलासा ॥